मेघदूत तथा भृङ्गदूत का तुलनात्मक अध्ययन

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

की पीएच॰ डी॰ (संस्कृत) उपाधि

हेतु

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शिखा त्यागी

शोध निर्देशिका

डॉ॰ पूनम लखनपाल

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

रघुनाथ गर्ल्स पी॰जी॰ कॉलेज, मेरठ

शोधार्थिनी

श्रीमती शिखा त्यागी

शोध केन्द्र

रघुनाथ गर्ल्स पी॰जी॰ कॉलेज, मेरठ।

मेघदूत तथा भृङ्गदूत का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत साहित्य एक अगाध रत्नाकर है, जिसमें रत्न मरीचियों को विकीर्ण करने वाले असंख्य कविगण हैं। प्राचीन काल से ही संस्कृत साहित्य की पीयूषधारा को ऋषि एवं ऋषिकाओं ने अपना अप्रतिम योगदान देकर परिप्लावित किया है। संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं के अन्तर्गत– महाकाव्य, शतककाव्य, गद्यकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तककाव्य, रूपक, चम्पूकाव्य आदि भेद आते हैं। इसी प्रकार विषय वस्तु के आधार पर भी संस्कृत साहित्य को – दूतकाव्य, चरितकाव्य, धर्मकाव्य, सन्देशकाव्य, स्तोत्र काव्य, पत्रकाव्य, आदि भागों में विभाजित किया जा सकता है।

जीवन के किसी एक प्रसंग को साङ्गोपाङ्ग प्रस्तुत करने वाला लघु काव्य खण्डकाव्य कहलाता है। रचना विधान के साथ–साथ विषय वस्तु के प्रस्तुतिकरण के आधार पर इसके अनेक भेद हैं, जिनमें दूतकाव्य एक बहुचर्चित प्रकार है।

दूतकाव्य की परम्परा का प्रमुख स्रोत ऋग्वेद ही है। सरमा–पणि सम्वाद सूक्त इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। लौकिक संस्कृत साहित्य में कालिदासकृत मेघदूत को ही दूतकाव्य का आद्यग्रन्थ माना जाता है। इसकी लोकप्रियता के कारण इस पर अनेक टीकाऐं लिखी गई तथा भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन, तिब्बती और चीनी आदि अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद भी लिखे गये।

मेघदूत की लोकप्रियता, मनोहारिता, भावपूर्णता से आकर्षित होकर परवर्ती कवियों द्वारा दूतकाव्य की परम्परा ही स्थापित कर दी गयी। वसन्त त्र्यम्बक शेवडे का अभिनवमेघदूतम्,

शिखा त्यागी

जग्गूवकुलभूषण का अद्भुतदूतम्, परमानन्दशास्त्रीकृत गन्धदूतम्, इच्छारामद्विवेदीकृत मित्रदूतम्, अभिराज राजेन्द्रमिश्र कृत मृगाङ्कदूतम् आदि आधुनिक दूतकाव्य परम्परा के आधुनिक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी क्रम में जगद्गुरु रामभद्राचार्य द्वारा रचित 'भृङ्गदूतम्' दूतकाव्य शैली में लिखा गया एक संस्कृत खण्डकाव्य है।

दूतकाव्य, सन्देश देने के कार्य के साथ–साथ साहित्यिक सौन्दर्य की भी अभिवृद्धि करते हैं। प्रबल मनोवेगों का स्वच्छन्द प्रवाह, श्रेष्ठ शब्दों का श्रेष्ठ क्रमविन्यास, हृदयस्थ रागात्मक अनुभूतियों का आस्वादनीय अर्थ–सौन्दर्य, और आनन्दोपलब्धि दूतकाव्यों का चरम काम्य रहा है।

दूतकाव्यों की रचना करते समय दूतों के चयन में यह अवश्य ध्यान रखा जाता है कि वह शीघ्रगामी हो, सन्देशदाता के भावों को पूर्ण रूप से समझ सके, सन्देश की यथार्थ व्याकुलता का निवेदन करने में कुशल हो। ऐसे दूत एवं दूतियों के रूप में कवियों ने मेघ, चन्द्र, इन्दु, मन, शील, चेतस्, पत्र, पदाङ्क और वात जैसे अचेतन तथा हंस, शुक, पिक, काक, मयूर, भ्रमर, चातक, चकोर प्वलङ्ग आदि पक्षियों एवं पशुओं सदृश चेतन प्राणियों का वरण किया है। प्रायः सभी कवियों ने दूत को सन्देश कार्य में प्रवृत्त करने से पूर्व उसके सामर्थ्य एवं दौत्यकर्म में कुशलता का वर्णन किया है।

रामभद्राचार्य एक प्रख्यात विद्वान, शिक्षाविद्, बहुभाषाविद्, रचनाकार, प्रवचनकार, दार्शनिक और हिन्दू धर्मगुरु हैं। वे चित्रकूट स्थित जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलाङ्ग विश्वविद्यालय के संस्थापक और आजीवन कुलपति हैं। इन्होंने 80 से अधिक पुस्तकों और

शिखा त्यागी

ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें संस्कृत रचनाओं में– अष्टाध्यायी पर काव्यात्मक टीका और प्रस्थानत्रयी पर संस्कृत भाष्य सम्मिलित हैं। 2015 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया। इनके द्वारा मेघदूत के आदर्श पर विरचित भृङ्गदूत भी पूर्वभृङ्ग एवं उत्तरभृङ्ग दो भागों में विभक्त है। मेघदूत का अभिशप्त प्रवासी यक्ष वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने पर रामगिरि से मेघ के द्वारा अपनी विरहव्यथा से परिपूर्ण सन्देश अपनी नवविवाहिता प्रियतमा–पत्नी के लिए भेजता है। उसी प्रकार भृङ्गदूत में राम वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रवर्षण पर्वत से भ्रमर के द्वारा अपनी विरहावस्था का सन्देश सीता के लिए प्रेषित करते हैं। सीता की दैन्य अवस्था का वर्णन करते हुए राम भ्रमर से कहते हैं–

त्यक्ताहारा स्वशिरसि जटामेकवेणीं दधाना
नेत्रे मीलन्मधुलिडसिताब्जोपमाने समाने।
मुक्ताभूषा पटरुचिनमच्चक्रवातीयपूषा
सोषः कालाकुलकुमुदिनीवैति दैन्यं प्रिया मे ।। १३ ।। पूर्वभृङ्ग

मेघदूत का मेघ एक अचेतन तत्व है तथा भृङ्गदूत का सन्देशवाहक भ्रमर, राम के मन का प्रतीक हैं।

अध्येय कृतियाँ श्रेष्ठ दूतकाव्यात्मक, खण्डकाव्यात्मक एवं गीतिकाव्यात्मक ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति एवं जीवन दर्शन की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। मानवीय चेतना, भावाभिव्यञ्जना, एकाग्र विचार, मार्गवर्णन में यथार्थता, विषय की कल्पनाशीलता, प्रवृद्ध अनुराग, सरल एवं सरस

शिखा त्यागी

भाषा एवं सन्देश के महत्व की दृष्टि से, दूतकाव्य परम्परा के अध्ययन क्रम में मेघदूत एवं भृङ्गदूत सहृदय जिज्ञासुओं के लिए पठनीय है।

दूतकाव्यों पर हुए प्रमुख शोध विषय हैं– 1. Critical Studies of Dutakavyas in Sanskrit Literature, Suman Sadashiv Rao. 2. Development of Dutakavyas in Sanskrit, Lalita Sen Gupta जादवपुर, 1990. 3. Sandeshkavyas in Sanskrit by राम कुमार आचार्य, आगरा, 1957 . 4. दूतकाव्य की परम्परा में अभिराजराजेन्द्रमिश्रकृत मृगाङ्कदूतम् : एक समीक्षात्मक अध्ययन, आकांक्षा केसरी, जौनपुर, 2009। 5. A critical Study of the Sanskrit Dutakavyas of Kerala, सुधा गर्ग, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 1985। 6. मेघदूत की परम्परा में रचित आधुनिक सन्देश का अनुशीलन, नरेन्द्र देव, पं० रविशङ्कर शुक्ला विश्वविद्यालय। 7. मेघदूत और पवनदूत का तुलनात्मक अध्ययन, आदित्य प्रकाश पाण्डेय, जौनपुर, 2005। 8. मेघदूत एवं सारिका–सन्देश का काव्यशास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन, सुमन शुक्ला, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय 2005।

मेरी दृष्टि में मेघदूत और भृङ्गदूत का भूगोल, धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं साहित्य विषयक किसी भी दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है।

भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से मेघदूत के अनुकरण पर लिखा गया भृंगदूत सन्देश काव्यों में अत्याधुनिक है एवं श्रृंगारिक कवि कालिदास के दूत काव्य और वीतरागी सन्यासी–श्रीरामभद्राचार्य के दूतकाव्य में दोनों कवियों के व्यक्तित्व की दृष्टि से क्या साम्य

शिखा त्यागी

और वैषम्य हो सकता है, इस जिज्ञासा ने मुझे यह शोध विषय चुनने के लिए प्रेरित किया है। अन्तः प्रेरणा से अनुप्राणित गहन अध्ययन नवीन एवं मौलिक निष्कर्ष निकालने में सहायक होगा। परिणाम में विद्वज्जन ही प्रमाण होंगे।

शिखा त्यागी

मेघदूतम् तथा भृंगदूतम् का तुलनात्मक अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय **आलोच्य ग्रन्थों के रचनाकार : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व**

(क) कालिदास

(ख) जगद्गुरु रामभद्राचार्य

द्वितीय अध्याय – **मेघदूत और भृङ्गदूत का काव्यत्व**

(क) खण्डकाव्य

(ख) गीतिकाव्य

(ग) दूतकाव्य

(घ) मेघदूत तथा भृङ्गदूत का परीक्षण

तृतीय अध्याय – **मेघदूत और भृङ्गदूत के कथानक की दृष्टि से तुलना**

(क) मेघदूत की कथावस्तु एवं मूल स्रोत

(ख) भृङ्गदूत की कथावस्तु

सिखा त्यागी

(ग) कथावस्तु की शास्त्रीय रचना की दृष्टि से आलोच्य दूतकाव्यों की तुलना

चतुर्थ अध्याय – मेघदूत और भृङ्गदूत के पात्र तथा चरित्र चित्रण की दृष्टि से तुलना

(क) मेघदूत के प्रमुख पात्र, गौणपात्र

(ख) भृङ्गदूत के प्रमुख पात्र, गौणपात्र

पंचम अध्याय – मेघदूत और भृङ्गदूत की सौन्दर्याभिव्यञ्जना की दृष्टि से तुलना

(i) आलोच्य दूतकाव्यों में रूप वर्णन एवं प्रकृति चित्रण

(क) स्त्री सौन्दर्य चित्रण

(ख) पुरूष सौन्दर्य चित्रण

(ग) प्रकृति सौन्दर्य चित्रण

(ii) आलोच्य दूतकाव्यों में भौगोलिक चित्रण

(क) मेघमार्ग एवं भृङ्गमार्ग

(ख) प्रमुख स्थल

(ग) प्रमुख नदियाँ

(घ) प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं

शिखा त्यागी

(ङ) अन्य

षष्ठ अध्याय – मेघदूत और भृङ्गदूत की भावाभिव्यञ्जना एवं रसाभिव्यञ्जना की दृष्टि से तुलना

(क) आलोच्य दूतकाव्यों में भावाभिव्यञ्जना

(ख) आलोच्य दूतकाव्यों में रसाभिव्यक्ति, अङ्गी रस, अङ्गभूत रस

(ग) आलोच्य दूतकाव्यों में रसाभास तथा भावाभास,

(घ) आलोच्य दूतकाव्यों में रसदोष तथा भावदोष

सप्तम अध्याय – मेघदूत और भृङ्गदूत की साहित्यिक दृष्टि से तुलना

(क) आलोच्य दूतकाव्यों में रीति एवं गुण निर्वाह

(ख) आलोच्य दूतकाव्यों में अलङ्कार प्रयोग

(ग) आलोच्य दूतकाव्यों में भाषा सौष्ठव

(घ) आलोच्य दूतकाव्यों में कवि-समय एवं काव्य-रूढ़ियाँ

शिखा त्यागी

अष्टम अध्याय – मेघदूत और भृङ्गदूत में प्रतिबिम्बित समाज एवं संस्कृति की दृष्टि से तुलना

(क) राजनैतिक परिस्थितियाँ

(ख) सामाजिक परिस्थितियाँ

(ग) धार्मिक परिस्थितियाँ

(घ) साहित्यिक परिस्थितियाँ

(ड.) आर्थिक परिस्थितियाँ

(च) पारिवारिक परिस्थितियाँ

(छ) ललित कलाऐं एवं उनका स्वरूप

उपसंहार

शिखा त्यागी

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मेघदूतम् — महाकवि कालिदास
2. भृङ्गदूतम् — जगद्गुरुरामभद्राचार्य
3. काव्यप्रकाश — मम्मटाचार्य
4. साहित्यदर्पण — आचार्य विश्वनाथ
5. काव्यादर्श — आचार्य दण्डी
6. गीतिकाव्य — डॉ0 रामलेखावन पाण्डेय
7. मेघदूत एक अध्ययन — डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल
8. मेघदूत एवं परवर्ती दूत काव्य — रुद्रदेव त्रिपाठी
9. संस्कृत के सन्देश काव्य — डॉ0 रामकुमार आचार्य
10. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा — चन्द्रशेखर पाण्डेय
11. आधुनिक संस्कृत साहित्य — डॉ0 हीरालाल शुक्ल
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास — वाचस्पति गैरोला
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास — बलदेव उपाध्याय
14. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास — डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
15. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास — राधावल्लभ त्रिपाठी
16. संस्कृत हिन्दी कोश — वामन शिवराम आप्टे

शिखा त्यागी